राजयोगिनी दीदी पुष्पारानी को भावभीनी पुष्पांजली

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा की अति लाडली, साकार मात-पिता के हस्तों से पली, विदर्भ क्षेत्र की सेवाओं के निमित्त महाराष्ट्र नागपुर सबज़ोन की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी दीदी पुष्पारानी जी का जन्म 1942 में मुलतान में हुआ था। 1956 में 14 वर्ष की छोटी आयु में ही आपने दादी मनोहर इन्द्रा से करनाल,पंजाब में ज्ञान प्राप्त किया और ब्रह्माकुमारी विद्यालय के सम्पर्क में आयीं। इस विद्यालय की शिक्षाओं से प्रभावित होकर आपने अपना जीवन समर्पित किया। आपकी लौकिक बड़ी बहन और माता जी (सावित्री बहन व किशन देवी माता) भी आपके साथ सेवा में समर्पित हो गए। विद्यालय के संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा तथा प्रथम प्रशासिका जगदम्बा सरस्वती की छत्रछाया में आपकी प्रतिभा निखरती गई।

आपने सन् 1972 में महाराष्ट्र के विदर्भ में ईश्वरीय सेवाओं को आरंभ किया। आज पूरे विदर्भ में 123 सेवाकेन्द्र, उपसेवाकेन्द्र आपने शुरु किये। आपसे प्रेरित होकर अनेक बहनों ने अपना जीवन समर्पित किया। आपके नेतृत्व में वर्तमान विदर्भ में 450 से भी अधिक ब्रह्माकुमारी बहनें सेवार्थ विभिन्न सेवाकेन्द्रों पर उपस्थित हैं।

आपका जीवन त्याग, सादगी, सरलता और प्रेमभाव से ओतप्रोत था। आप यज्ञ की सबसे पहली हिन्दी टाइपिस्ट रहीं। दीदी धाराप्रवाह रूप से आठ भाषाओं में कुशल रूप से संवाद कर सकती थीं। कुछ समय पूर्व आपने संकल्प लिया था कि हमें नागपुर में बहुत बड़ा रिट्रीट सेंटर बनाना है, वहाँ अभी बहुत तीव्र गति से निर्माण कार्य चल रहा है। आप नम्रता की मूर्ति और मिलनसार स्वभाव की थी इसलिए सर्व का दिल जीत लेती थी।

23 अप्रैल 2016 को आप अपने भौतिक शरीर का त्याग कर बापदादा की गोद में चली गई। ऐसी महान नम्रता और त्याग की मूर्ति दीदीजी के अंतिम दर्शन के लिए माउण्ट आबू से ब्र.कु. श्रीनिवास, ब्र.कु. संजय, ब्र.कु. रवि, आ.प्र. के हैदराबाद से ब्र.कु. कुलदीप दीदी, बुरहानपुर से ब्र.कु. मंगला दीदी तथा विदर्भ के सभी सेवाकेन्द्रों की राजयोग शिक्षका और ब्रह्मावत्स पहुंचे। पुष्पा दीदीजी की अंतिम महाप्रयाण यात्रा महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश ज़ोन इंचार्ज ब्र.कु. संतोष दीदी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

दीदी का संक्षिप्त विवरण

1. जन्म - 1942, मुलतान
2. आध्यात्मिक ज्ञान - 1956, करनाल।
3. बड़ी बहन सावित्री व माता किशन देवी के साथ सेवा में समर्पित।
4. पूरे विदर्भ में आपके संचालन में 123 सेवाकेन्द्र खुले। 450 से अधिक ब्रह्माकुमारी बहनें आपके साथ सेवा में सहयोगी रहीं।
5. आपका जीवन सम्पूर्ण त्यागी, तपस्वी और सरलता भरा रहा।
6. महाप्रयाण 23 अप्रैल 2016।

वीरगंज-नेपाल। माननीय अर्थमंत्री विष्णु पौडेल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. जमुना व ब्र.कु. बेली।

हाथरस-आनंदपुर(उ.प्र.)। प्रशासनिक सेवा सेमिनार के लिए जिलाधिकारी अविनाश कृष्ण सिंह को निमंत्रण देने के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. शान्ता। साथ हैं ब्र.कु. दुर्गेश व अन्य।

फरीदाबाद सेक्टर 29। होली चाइल्ड स्कूल में 'डी-स्ट्रेसिंग' विषय पर सेमिनार के पश्चात् समूह चित्र में स्कूल के प्रिन्सीपल दीपक राय, वाइस प्रिन्सीपल नैना बहन, ब्र.कु. अन्नू, ब्र.कु. ज्योति व टीचर्स।

योग समग्र मानवता हेतु एक विज्ञान

'विश्व योग दिवस' पर आयुष मंत्रालय द्वारा हुआ त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी। मंचासीन हैं श्रीपाद नाईक जी, अजीत शरण, डॉ. आई.बी. वसवरेड्डी, डॉ. चिन्मय पंड्या, साध्वी सरस्वती भगवती व अन्य प्रतिष्ठित जन।

नई दिल्ली। पिछले वर्ष हुए प्रथम `विश्व योग दिवस' की अद्भुत सफलता के बाद भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने आगामी द्वितीय `विश्व योग दिवस' को समग्र संसार में अधिक लोकप्रिय बनाने हेतु तालकटोरा स्टेडियम में एक `त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय योग उत्सव' का आयोजन कर 21 जून तक विश्व भर में चलने वाले योग अभियान का शुभारंभ किया।

इस त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय योग उत्सव में विभिन्न प्रतिष्ठित सरकारी एवं गैर सरकारी योग संस्थान, संगठन और शैक्षणिक संस्थाओं जैसे कि मोरारजी देसाई नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ योग, आर्ट ऑफ लिविंग, ईशा फाउण्डेशन, श्री औरोबिन्दो आश्रम, पतंजलि योग पीठ, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय आदि शामिल हुए।

- केन्द्रीय आयुष मंत्रालय ने द्वितीय 'विश्व योग दिवस' हेतु अंतर्राष्ट्रीय योग अभियान का किया शुभारंभ।
- योग किसी धर्म की विरासत नहीं है - श्री श्रीपाद नाईक।
- केवल एक सरकारी परियोजना न समझ इसे पूरे मानवता के लिए एक सार्वजनिक मार्ग समझना होगा।
- राजयोग एक सकारात्मक सोच, अनुभव एवं स्वस्थ जीवन प्रणाली - ब्र.कु. शिवानी।

इस कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि आयुष मंत्रालय के मंत्री श्री श्रीपाद येस्सो नाईक ने कहा कि योग किसी धर्म की विरासत नहीं लेकिन समग्र मानवता के कल्याण, सर्वांगीण स्वास्थ्य, शांति, सुख एवं समृद्धि के लिए एक विज्ञान है, एक सकारात्मक, स्वस्थ और सरल जीवन शैली है। उन्होंने कहा कि योग केवल आसन-प्राणायाम आदि हठ योग का नाम नहीं बल्कि ये साधक की मानसिक, नैतिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए है।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्रसिद्ध प्रेरणादायी वक्ता ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि योग यानि राजयोग एक सकारात्मक सोच, अनुभव एवं स्वस्थ जीवन प्रणाली है। उन्होंने कहा कि राजयोगी का सकारात्मक सोच एक शक्तिशाली ऊर्जा के रूप में अपने शरीर, मन, दूसरे लोग, पर्यावरण और प्रकृति के ऊपर स्वस्थ और सुखदायी प्रभाव डालता है, संबंधों में मधुरता, एकता, सद्भावना, सहयोग और समरसता लाता है।

उन्होंने कहा कि इन सभी संबंधों में संतुलन और उत्कृष्टता का आधार मनुष्यात्मा का परमात्मा के साथ मन-बुद्धि से स्नेह युक्त सम्बन्ध या संयोग है, जिसे राजयोग कहा जाता है।

आयुष मंत्रालय के सचिव अजीत शरण, मोरारजी देसाई इंस्टीट्यूट ऑफ योग के निर्देशक डॉ. आई.बी. वसवरेड्डी, गायत्री पीठ के डॉ. चिन्मय पंड्या, परमार्थ निकेतन के साधवी सरस्वती भगवती, आर्ट ऑफ लिविंग के श्रीमती कमलेश, पतंजलि पीठ के स्वामी जयदीप आदि विशिष्ट जनों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस कार्यक्रम के दौरान ब्रह्माकुमारी संस्था की निर्देशिका ब्र.कु. आशा ने सभी को राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया व इसकी परिभाषा व इसकी बहुआयामी उपयोगिता से सभी को परिचित कराया।

कार्यक्रम के अंत में योग और स्वास्थ्य संबंधी सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए।

भुवनेश्वर-ओडिशा। बी.जे.बी. नगर सेवाकेन्द्र द्वारा एस.बी.आई. ट्रेनिंग सेंटर में 'पॉज़ीटिव थिंकिंग' विषय पर सेमिनार के पश्चात् ट्रेनिंग सेंटर के ए.जी.एम. के साथ बातचीत करते हुए ब्र.कु. मंजू व ब्र.कु. तपस्विनी।